

DPN 6121

Title : जेमगीता (यमगीता) JEMA GĪTĀ (YAMA GĪTĀ)

Run. No. 6812

Cat. No. 36

Micro. No.

Subject गीता Hymn.

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.-New. / Maith.-New. / New.-Nep. /

Size in cms. 18.5 X 7.8

Folios 16

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS 1926

Ruler / place

पशुपतिमान'पःमाय
Paśupati mān' Pāhmay

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaśaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

* स्वस्ते श्री गणेशाय नमो ॥ मार्कण्डेयवाच ॥ यद्गुरुं पुमां लोकैः सर्वरक्षाकरं नृणां ॥ यत्र
कस्य विनाशयतं तन्मे ब्रूहि पितामहे ॥

नेपाली ॥ तादां उपान्त संजे कालमा जो यो जेम गिता पाठ गरला : तस् मनुषे
करा आकाल मृतु पनि हुवैरा ॥

□ इति श्री जेम गिता भाषाउत संवादे सुदो वा आसुदो वा माम दोष सादिमा ॥

△ इति श्री सम्बत् १९२६ सालमा नेपाल कान्तिपुर मुकाम हुवा लेखितम्
साराउरा सुदि १५ रोज २ सुभम् ॥

यसपादे गरेश सरस्वती आदि विभिन्न देव देवीका स्तुतिहरू छन् ।

स्वस्त्यस्तु श्री गणेशाय नमः ॥ महाकर्मव्यास ॥ कालि

स्वस्ति धीम

स्वस्ति
स्वस्ति श्री
गिरिराज

स्वस्ति श्री सुर्वो
स्वस्ति श्री सुर्वो
स्वस्ति श्री सुर्वो

स्वस्ति

स्वस्ति श्री सुर्वो पुनः पुनः
स्वस्ति श्री सुर्वो पुनः पुनः

२२

स्वास्त्याराधना

स्वस्ते श्रीगुरु

स्वस्ते श्री गुरो साये नमो ॥ १॥ मार्दरो यथा च ॥ २॥ यदु
हं प्रमिलोके सर्वरक्षा करं नृणां ॥ ३॥ यन्न वस्य विताम्य
तंतमेव हि पितामहं ॥ ४॥ ब्रह्म उवाच ॥ ५॥ आसि गु
हं तमं विप्र सर्वभूतो प्रकारकम् ॥ ६॥ देव आस्तु क
व वं पुरोत ह्युग्रे माहात्म्य रो ॥ ७॥ प्रथमं स ये

कृपुत्रि वदति यात्रमवारिणि ॥ ८॥ तिनियायंद
यति वतिकुषमुन्दे निवैश्वं ॥ ९॥ पंचमायं
दमात्येति वसमकात्यये शानि वं ॥ १०॥ सप्तमं
कातरात्रि माहाजोरिति वआसु मं ॥ ११॥ रावमंसि
विदता वनवदुर्गप्रकितिता ॥ १२॥ उक्ता तारो तानेरा

मा सो ब्रह्म सौधमाहासुरो ॥ ज्ञान परायणो सर्वस्व
रक्षरे देवि नारायण शान्तमस्तुते ॥ १॥ कर पु र गो
रुक्तावतारं शृंगार सारं भुजगे वृद्धारं ॥ स
दारमं रं द्विदयो रजिदं भवं भवति स हि तं
नमासि ॥ ५॥ आ नै रा म त्र पो व ना दि ग व नं
ह त्वा सि गां क्तं च नं ॥ वै डे हि दू र नं ज ता यु म

र नं सु ग्रि व स्यं मा व नं वा ति नि ग्र ह नं स मु द्र त
र नं लं का पु रि द्रा ह नं ॥ प श्चा द्वा न न कुं भ व
र न त्थ नं य ता ध्व रा मा य नं ॥ १॥ रा मो रा
ज म ति स दा वि ज य त रं र नं रं सै भ जे ॥ रा
ने ना नि ह ता नि सा च र च मु रा मा या त स्यै त
म ॥ रा मं नि स्त्रि पराय न म म परं रा म स्य दा

ॐ ह्रीं ॥ रामे चित्तं तस्य दामनं जतु मे भोरा
ममाधर ॥ १ ॥ कस्तुरि तिलं कौस्तुभं ॥ नासाग्रे यजुर्मुक्तिर्क
करतले विजुर्करेण्डकं ॥ स्रग्गिह रिचं दनं
चतुर्लसि कंथे च मकुतवति ॥ गोपास्त्रपरि
वे स्थितो विजयते गोपास्तच्छूयानिति ॥ १ ॥

पञ्चनैव यदा करि रपि तपि दोषो वसंतस्य
किं नो लुब्धोऽप्यजतोऽकरो यदि दिवा सूर्यस्य
किंदु सतं ॥ वयं नैव परं तिचातकं शुभे मे
द्यस्य किंदु सतं ॥ येन पुनर्वि विना हलात
नि यितं तस्मिन् जितं कश्चिद् ॥ १ ॥ वैद्यपातर
रं नतं कपठिर्ग स्वाध्यायहि न दिजं ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ राजानां
चक्रं नमिष्ये ॥ राजानां चक्रं नमिष्ये ॥ राजानां
चक्रं नमिष्ये ॥ राजानां चक्रं नमिष्ये ॥ राजानां
॥ १ ॥ राजा धर्मविना द्वाजसु चिन्तागपानवि
नायो गिता ॥ कान्तास्य विना द्वाजसु चिन्ता
गपानविना यो गिता ॥ कान्तास्य विना हयो

गतिविना भुव्यचजोतिविना यो ध्यायुर्वि
नातपोव्रतविना हन्दोविना गिते ॥ कान्ता
ह्येह विना नरो हरिविना मुचंगुसिधुर्बुधा
॥ १ ॥ न ध्योतं पदमिच्छर व्यविधि वर
संसारविहितय ॥ स्वर्गद्वारकपाटपाटन

पटुधर्मेपिनोपाजितं॥ नारिपिनपयोधरो
युयुगलस्वप्रेपिनालिङ्गितं॥ मातुकेव
नमेवयोवनवनक्षेदेकधार्थ्येयर्थे॥१॥
मद्विष्णोसितासितासमसितासिद्धिर्नति
पितेपयो॥ स्वप्नानेन सुधाप्राधादक

तिधार्माधर्यंदिता॥ सत्पुंहुहितदिय
जिवमवतांभुयोमवेभ्रास्यता॥ रुद्धेत्
पक्षरयो रियंमधुरिमोदुःखचिह्नक्ष
न॥२॥ स्वर्गस्थितानांयहजिवलोकेचत्वा
रिचिह्नानिमधुरंनवाति॥ देवार्चनंभ्रा

ॐ नमः पुज्या मित्रं तव को प्रियो तिला च वा नि दु
रि इतामं धुजन व्यवेर म॥ निच प्रसंगो परदारसे
भानर व्यचिं द्वातिन रुक्तागन व्य॥ १॥

लुग्न ॥ ॥ गां उ का ॥ ॥ ५ छारमा धरवना
इव सन्य ॥ ॥ तस्का धरमा नारका धर ॥
॥ २८ ॥ मसा रामा लुक्क वी ॥ ५ छ मारिा वं ब्रल
पन्य वी जगा मा धरमा ॥ ॥ भत वय वी ॥ ५ दार
नी स वी जो ठ मा ॥ ॥ ॥ म ग पा लु वी ठा उ म

तस्ताठा उमा जाईकरावस ॥३०॥ जस्का द्यरम
कुकुरविरा ला पा ल्यका सुगुर संजे पा ल्यके
छन ॥३१॥ तसे काद्यरमा जाईकरावस ॥३२॥ जे
से येति वात दुत हर ले सुपरतव दुत हर
मा हां हर्क मरा भैकरा बुसि भै रहन या ॥३३॥

ताहां उमा त संजे का लमा जो यो जे मंगिता
पाठजरला तस मनुष्ये कराया का ल मनुषनि
हवै रा ॥३४॥ माहा पुरोतसे ले पा उला ॥३५॥ जो
ये मंगिता पाठजरला जो सुनला तस मनुष्ये
राहिरा भनि ग्राया का जे मका दुत हरूप

होला विध्य आर्चिरो जि करण निरो जि हो
ला ॥ ॥ ॥ ला हि मि पति प्रति हो ला ॥ ॥ ॥ यो
क सि डं वि रि भा भया भुत प्रेत पि वा स को भ
या ॥ इ वि न ह रु का भये ना सः ॥ ति स व पा प हु
ठि भ करण त स म नु ये ॥ वि स ७ नु लो का भानि

ॐ नमः शिवाय ॥ इति श्री जे म गिता भाषा उत सं
 म्बादे सुदे वाप्रा सु दो वा माम दो ख रादि
 द्या इति श्री सम्ब त १८ २६ सा लमा ने पाल
 दा न ति पुर मु दाम हु दा ले वि त म् सा रा
 उ रा सु दि १ ५ रो ज र सु भ्र ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ अथर्वं ह त त तं ग जे द्रवरत्न मे
दरे सुंदर ॥ प्रयो हं म डु गं दलु ध म रूप व्या लो ल गं द
स्थल ॥ दंता द्या त वि द्य रि ता द्वि व तिता रि धु ए सो
भा क र ॥ व न्दे सै ल सु ता सु तं ग न प्र ति सि धि प्र
दं क र्म सु ॥ १ ॥ अ वि रल म द जल नि व हं म म र
कृ त्ना ने क से वि त क पो ल ॥ अ भि म त फ ल दा
ता रं का मे स ग न प्र ति व न्दे ॥ १ ॥ सु क्ता वं द्य वि
वा र सा र प्र र मा ना द्यां ज ग त्वा स्तु पि ति ॥ वि रण
पो स्त क धा र ति म म हि तां जा द्यां ध क्ता र पा हा ॥
ह स्ते स्फ र ति क मा ति कां वि र द टिं प म सि ने
स स्थि तां ॥ व न्दे तां प र मे स्वरिं न ग व तिं वु धि
प्र दा सा दा म ॥ १ ॥ स र भू ति त म सु भ्यं व र दे
का म सु पि ति ॥ वि द्यारं भं क रि र व्या मि सि धि

भक्ति मे स्वर ॥ सताकारं भुजगसेतं पद्मनाभं सुदे
संविस्वाधारांगगनसद्वि स मेघवरतं सुमार्गं ॥ तस्य
मिकातं कमलतयतं योगभिर्घातगं वं ॥ वन्दे
विष्णुभक्तिमयाहरतं सर्वलोकैकतांथं ॥ १॥ अन्ध
ताच्युतद्वेपरमोमकुलपुरुषोत्तमविष्णु ॥ वासु

देवभगवतन्निरुद्ध ॥ श्रीपतेस्समग्रदुःखम
सेसं ॥ १॥ नारायणापरं ब्रह्म नारायतपरं तप ॥ ना
रायतपरं हृदयं सर्वनारायतात्मकं ॥ १॥ वन्दे देव
उमापतिं सुरगुरुं ॥ वन्दे भगवत्कारणं ॥ पतंगभु
सतं भगवत्तु वन्दे पद्मनाभं ॥ वन्दे सुय्यं ससा

कवैन्दितयतनवन्देमुकुन्दप्रियं॥ वन्देभक्तज
नाम्नायैचवरद्वन्द्वे शिवं इन्दुं॥ १॥ वृद्धाये
नकुलालकीर्तिरामितोवृद्धादुभाराशेदरे॥ विदु
येनदसावतारगहनेनेस्तोमाहासंजतते॥ रुद्रो
नकुलपालपालिरतनमिह्यातनंजतरित॥ सुषो

धावतितितयमेवगगनेतस्यैतस्यकर्मनै॥ १॥ मि
जस्वत्वर्यारिपुनयवलेर्लुधधनैरिचर॥ कावै
नीद्वजमादरेनयुवतिप्रेमासमेवाध्वानि॥
अत्यग्रं सुसिद्धिर्गुनं प्रनतिभिर्मुच्यते कथाभिर्गु
धमविज्ञानिरसिकैरसेनसकलं सिलेनकुप्य

ॐ ॥ १ ॥ सति यलु कलं कं तर्कं पद्यताते ॥ युव
तिकुचनिपात पद्यतां केस जाते ॥ जनधिन सजे
यं पंदितीति धनिसुर्व ॥ वयासि धन विजे कोतिर
विजे कोलि धा ॥ १ ॥ योगेता भूपसितो वृत्तं नच
रितं दानं तदन्तं मया गं गतिरुत्तरं गतिर्मितं जनै

दमा त्याहरिनी चितरस्यामाद्रि वरकुं कुमेन रचिता
तालिद्रिता क्ताति दिदृथं जन्मातिर धर्कं गतम
होरन्यो यथा मातति ॥ १ ॥ जयंति मंगना क्ताति
भद्रक्तालि क्ताति ॥ दुर्गाक्षमा सिवा धा त्रिस्था
हास्य धान मस्तुते ॥ १ ॥ तरनागतदिता रथ पीर